© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

# परिवहन मार्गजाल एवं विपणन केन्द्र : सिद्धार्थनगर जनपद का प्रतीक अध्ययन

**रीता रानी**
शोध छात्रा, भूगोल विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर।

**शोध आलेख सार :–** परिवहन का तात्पर्य व्यक्तियों या वस्तुओं की उद्देश्यपूर्ण गतिशीलता से है। किसी भी अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक भूदृश्य का विश्लेषण किया जा सकता है। आर्थिक सन्दर्भ में परिवहन आवश्यकता पूर्ति हेतु विकसित होता है। इस प्रकार माँग और आपूर्ति के परिणामस्वरूप ही विपणन केन्द्रों का जन्म होता है। परिवहन एवं विपणन केन्द्र सम्बन्धी विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि विपणन केन्द्रों के विकास को प्रभावित करने में परिवहन मार्गजाल मुख्य भूमिका का निर्वाह कर रहे है।

**मुख्य शब्द :–** परिवहन, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, विपणन, केन्द्र, मार्गजाल।

**प्रस्तावना :–** परिवहन का तात्पर्य व्यक्तियों या वस्तुओं की उद्देश्यपूर्ण गतिशीलता से है। किसी भी अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक भूदृश्य का विश्लेषण किया जा सकता है। आर्थिक सन्दर्भ में परिवहन आवश्यकता पूर्ति हेतु विकसित होता है। इस प्रकार माँग और आपूर्ति के परिणामस्वरूप ही विपणन केन्द्रों का जन्म होता है। सामान्यतया जब अर्थतन्त्र अपने प्रारम्भिक रूप से रहता है तो लोगों की आवश्यकताएं सीमित रहती हैं, दो विभिन्न स्थानों के बीच माँग आपूर्ति का कार्यात्मक अन्तर्सम्बन्ध ही परिवहन को जन्म देता है, आवयकतानुसार विभिन्न वस्तुओं की पूर्ति माँग के अनुसार होने लगती है। यह प्रक्रिया ही माँग के प्रारम्भिक विपणन केन्द्र को जन्म देती है।

आदि काल से ही शनैः–शनैः परिवहन के साधनों और मार्गों का विकास होता रहा है। एक समय था जब मनुष्य स्वयं ही परिवहन का साधन था अर्थात् वह अपना भोजन और अन्य आवश्यक पदार्थ स्वयं ढोकर लाता था। **कनवर्स** के अनुसार, विपणन भूगोल मनुष्य की उन क्रियाओं से सम्बन्धित है, जो स्थान समय, अधिकार एवं उपयोगिता को अभिवृद्धि से सम्बन्धित होता है। **प्रो0**

**उल्मान** के अनुसा, प्रयास से परिवहन एवं यातायात का सर्वांगीण अध्ययन सम्भव हुआ तथा भूगोल की स्वतंत्र शाखा के रूप में प्रतिस्थापित हुआ। यदि परिवहन के लिए आवश्यक उपर्युक्त तथ्यों के विकास और वितरण प्रतिरूप का अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि मानव द्वारा क्षेत्रियता अभिगम्यता सीमित है, क्योंकि अभिगम्यता ही परिवहन मार्गों की सक्षमता का मापन करती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सिद्धार्थनगर को प्रतीक अध्ययन के लिए चुना गया है।

**परिवहन और विपणन केन्द्र का महत्व :**

परिवहन तंत्र एवं विपणन केन्द्र एक ही आर्थिक प्रक्रिया के दो समान पहलू है। विपणन केन्द्र अपने पृष्ठ प्रदेशों से परिवहन मार्ग द्वारा जुड़े होते है। परिवहन मार्ग पर बस अड्डे, रेलवे स्टेशन क्रॉस बिन्दुओं एवं नये मार्ग के सन्धि स्थलों पर विपणन क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। वास्तव में परिवहन तन्त्र एवं विपणन केन्द्र स्थलों का विपणन केन्द्रों की आवृत्तियों में वृद्धि होती है। कृषि उपजों को बाजार तक ढोने वाले पशुओं, खच्चर, घोड़ा आदि का प्रयोग किया जाता है। अतः विपणन केन्द्र अपने प्रभाव प्रदेश से रेलमार्ग, पक्की एवं कच्ची सड़कों अथवा विपणन केन्द्र क्रमशः दैनिक विपणन केन्द्र स्थल अथवा एक नगर बन जाता है। विपणन केन्द्र सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और अन्य क्रियाकलापों का सम्पादन करने वाले स्थान हैं, जहाँ क्रेताओं एवं विक्रेताओं का समूह होता है। विपणन केन्द्रों द्वारा सम्पादित विपणन कार्य कृषि उपजों को बाजार तक ले जाने के लिए साईकिल, बैलगाड़ी, मजदूर या बोझ ढोने वाले पशुओं, खच्चर, घोड़ा आदि का प्रयोग किया जाता है। अतः विपणन केन्द्र अपने प्रभाव प्रदेश से रेलमार्ग, पक्की एवं कच्ची सड़कों अथवा पगडंडियों से जुड़े जाते है। परिवहन के साधनों का सुव्यवस्थित विस्तार, विकास तथा सुव्यवस्थित नियंत्रण उस तंत्र के गतिशील होने का द्योतक है। परिवहन के साधनों के माध्यम से विभिन्न स्थानों की दूरियों को नजदिकियों में बदलकर सुदृढ़ सार्थक सम्बन्ध स्थापित किये जाते है। परिवहन जाल इन स्थानीय बाजारों को राष्ट्रीय बाजार से और राष्ट्रीय बाजार को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में जोड़ता है। सड़क, रेलमार्ग, वायुमार्ग, आन्तरिक जलमार्ग तथा जलपोत सभी व्यापार को बढ़ाने के लिए आपस में जुड़े हुए है। बन्दरगाह एवं विमानपत्तन देश के हर काम करते हैं। फलस्वरूप नगरीय केन्द्रों का विकास होता है और उत्प्रवास के द्वारा मानव एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँच जाता है। परिवहन तन्त्र इस प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान करता है।

## आँकड़ों का स्रोत एवं विधितंत्र :

प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन क्षेत्र एक दीर्घस्तरीय क्षेत्र है। इसलिए प्राथमिक ऑकड़ों के साथ ही द्वितीयक आँकड़ों का भी प्रयोग किया गया है। विपणन–स्थल पर जाकर विपणन स्थल की आकारिकी का निर्माण प्रत्यय के आधार पर किया गया, जिसमें विक्रेता सर्वेक्षण के लिए विपणन दिवस, दुकानों के प्रकार के अनुसार एक अनुमान पर क्रेताओं और विक्रेताओं का प्रश्नावली के माध्यम से सर्वेक्षण किया गया, जिनका नाम, पता विपणन केन्द्र से उसके आवास की दूरी, बाजार आने का साधन के केन्द्रों में दुकानों की संरचना और परिवहन साधन के सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। आर्थिक सर्वेक्षण 2014–15 से प्राप्त किया गया है। 2011 के ऑकड़ों को एकत्रित कर विपणन केन्द्रों व दुकानों का सर्वेक्षण किया गया। अध्ययन में उपयुक्त तालिका, मानचित्र विधियों का प्रयोग किया गया है।

## अध्ययन का उद्देष्य :

मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र के परिवहन मार्गजाल एवं विपणन केन्द्रों के उपयोग प्रतिरूप में हो रहे परिवर्तन संकल्पनात्मक रूप में यह माना गया है कि विकसित परिवहन जाल विपणन तन्त्र को विकसित करता है और विपणन तंत्र ग्रामीण विकास में सहायक बनता है। परिवहन के अन्तर्गत परिवहन मार्गजाल के क्षेत्रीय प्रतिरूप का निर्धारण, अन्तर्सम्बद्धता और अभिगम्यता का विश्लेषण है। परिवहन एवं विपणन केन्द्रों की स्थिति एवं वितरण का अध्ययन विपणन केन्द्रों की कार्यात्मक आकारिकी एवं पदानुक्रम का अध्ययन विपणन, विपणन चक्र क्रेता–विक्रेता व्यवहार और विपणन प्रभाव प्रदेश की पहचान परिवहन एवं विपणन की विशिष्टताएँ और क्षेत्रीय विकास होता है।

## अध्ययन तंत्र का परिचय :

सिद्धार्थनगर जनपद हिमालय के पाद प्रदेश में $27^0$ उत्तरी अक्षांश से $27^030'$ उत्तरी अक्षांश तथा $82^030'$ पूर्वी देशान्तर से $83^020'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद की उत्तरी सीमा नेपाल देश से मिलती है। पूर्वी सीमा महराजगंज जनपद, दक्षिणी सीमा बस्ती जनपद तथा पश्चिमी सीमा बलरामपुर जनपद से मिलती है। नेपाल से लगी जनपद की उत्तरी सीमा 76 किमी0 है। दक्षिण में बस्ती जनपद की सीमा 65 किमी0 है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 2956 वर्ग किमी0 है।

सिद्धार्थनगर जनपद का इतिहास गौतम बुद्ध के जीवन से जुड़ा हुआ है। 2500 ईसा पूर्व शाक्यों ने अपनी राजधानी कपिलवस्तु में बनायी। 1865 ई0 में गोरखपुर मण्डल के महराजगंज, बस्ती मण्डल के सिद्धार्थनगर, संतकबीर नगर तथा देवीपाटन मण्डल के बलरामपुर और श्रावस्ती जनपद में आ गया।

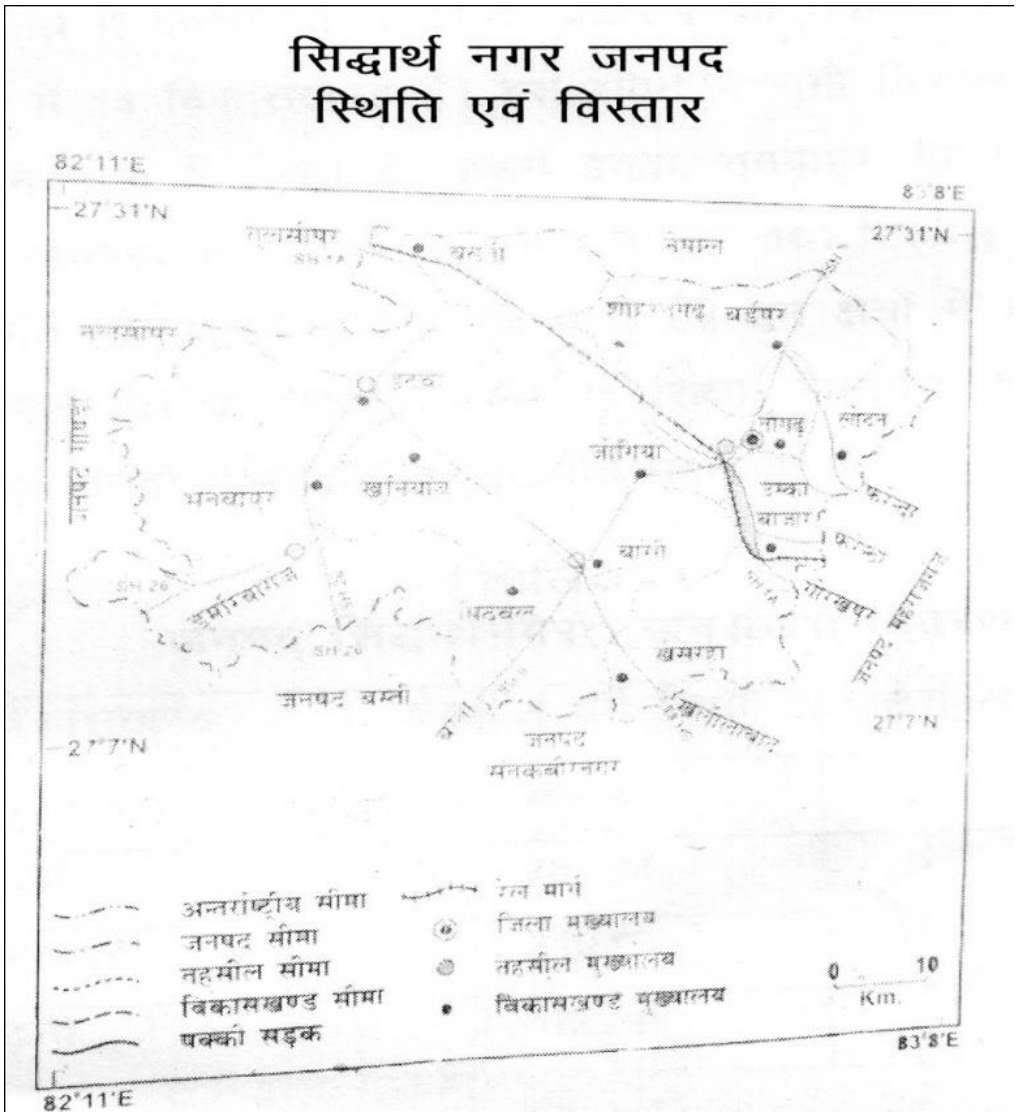


## आँकड़ों का विष्लेषण :

परिवहन मार्गजाल एवं विपणन तंत्र के अन्तर्गत परिवहन मार्गजाल के क्षेत्रीय प्रतिरूप का निर्धारण अन्तर्सम्बद्धता और विपणन केन्द्रों के वितरण में परिवहन मार्ग की क्षमता से ग्रामीण विकास को गति मिलती है। पुनः माँग और आपूर्ति में वृद्धि तथा परिवहन जाल में गुणात्मक और मात्रात्मक वृद्धि के परिणामस्वरूप आवर्तिता में वृद्धि होती है और विपणन केन्द्र क्रमशः दैनिक विपणन

केन्द्र–स्थल अथवा एक नगर बन जाता है। 2017 के जनसंख्या के आधार पर सिद्धार्थनगर जनपद का जनघनत्व 884 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। सिद्धार्थनगर का भौगोलिक क्षेत्रफल 2011 में 2895 वर्ग किमी0 है।

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व के प्रतिरूप को तालिका संख्या 1 से स्पष्ट किया गया है। जनपद में 14 विकासखण्ड हैं। इस संवर्ग में सभी विकासखण्ड जनपद के उत्तर एवं उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित है। इसमें इटवा, भनवापुर, बढ़नी, शोहरतगढ़, जोगिया, खुनियॉव, बांसी, खेसरहा, लोटन, बर्डपुर, उस्का बाजार तथा मिठवल विकासखण्ड सम्मिलित है। इसके अन्तर्गत नौगढ़ एवं डूमरियागंज आते हैं। इन क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि बाजार केन्द्र परिवहन मार्गजाल एवं स्वास्थ्य सुविधाएं, शिक्षा, यातायात के लिए रेलमार्ग, सड़क मार्ग, मध्य विपणन केन्द्रों में बाजार सुविाा अति महत्वपूर्ण हैं।

**तालिका – 1**

**जनपद सिद्धार्थनगर : जनसंख्या वितरण**

| क्र0सं0 | विकासखण्ड | क्षेत्रफल वर्ग किमी0 | जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग किमी |
|---|---|---|---|
| 1 | खुनियॉव | 285.07 | 752 |
| 2 | इटवा | 281.24 | 653 |
| 3 | भनवापुर | 310.65 | 689 |
| 4 | बढ़नी | 186.16 | 780 |
| 5 | शोहरतगढ़ | 210.69 | 682 |
| 6 | बर्डपुर | 162.49 | 1015 |
| 7 | नौगढ़ | 139.62 | 1219 |
| 8 | जोगिया | 205.37 | 647 |
| 9 | उस्का बाजार | 145.27 | 826 |
| 10 | डुमरियागंज | 272.53 | 1050 |
| 11 | बांसी | 191.89 | 794 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 12 | मिठवल | 227.61 | 930 |
| 13 | खेसरहा | 212.25 | 911 |
| 14 | लोटन | 114.32 | 2955 |

*स्रोत : सांख्यिकी पत्रिका सिद्धार्थनगर 2014–15*

जनगणना वर्ष 2011 में क्षेत्र के जनघनत्व को आधार मानकर विकास खण्डवार जनसंख्या घनत्व की गणना की गई। विकासखण्ड जनसंख्या वितरण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जनसंख्या वितरण तालिका 2 में प्रदर्शित किया गया है।

**तालिका – 2**

**जनपद सिद्धार्थनगर का जनसंख्या घनत्व**

| क्र0सं0 | श्रेणी | घनत्व / वर्ग किमी0 | विकास खण्डों की संख्या |
|---|---|---|---|
| 1 | अति न्यून | < 600 | 5 |
| 2 | न्यून | 600 – 700 | 4 |
| 3 | मध्यम | 700 – 800 | 3 |
| 4 | उच्च | > 800 | 2 |
| | योग | | 14 |

*स्रोत : सांख्यिकी पत्रिका सिद्धार्थनगर 2014–15*

## निष्कर्ष एवं सुझाव :

परिवहन एवं विपणन केन्द्र सम्बन्धी उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि विपणन केन्द्रों के विकास को प्रभावित करने में परिवहन मार्गजाल मुख्य भूमिका का निर्वाह कर रहे है। उपरोक्त विशेषताओं के अध्ययन क्षेत्र जनपद सिद्धार्थनगर के परिवहन एवं विपणन केन्द्रों के अन्तर्सम्बन्धित अध्ययन से निम्नलिखित सामान्य निष्कर्ष निकलते है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची :


1– सिंह, जगदीश (1977) : परिवहन तथा व्यापार भूगोल।

2– श्रीवास्तव, वी0के0 एवं दीक्षित, रामस्वरूप (1996) : विपणन भूगोल, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

3– प्रसाद, रामअशीष (1998) : निचले गंगा घाघरा दोआब के मध्य श्रेणी के नगरों में अन्तःनगरीय विपणन भूगोल का तुलनात्मक अध्ययन दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।